पाठ – तुम कब जाओगे, अतिथि

शब्दार्थ-

1. चतुर्थ दिवस – चार दिन
2. निस्संकोच – बिना संकोच के
3. एस्ट्रॉनॉट्स – अन्तरिक्ष यात्री
4. अंतरंग – घनिष्ट
5. अज्ञात आशंका – अन्जान डर
6. स्नेह-भीगी – प्यार से भीगी
7. भावभीनी – प्रेम से ओत-प्रोत
8. आघात अप्रत्याशित – अनसोचे प्रहार
9. औपचारिक – दिखावटी
10. निर्मूल – बिना जड़ की
11. कोनलों – कोनो
12. सौहार्द – हृदय की सरलता
13. गुंजायमान – गुँजित करने के

प्रश्न-अभ्यास (मौखिक)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है?

उत्तर- अतिथि चार दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है।

egyanarchive

प्रश्न 2. कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही हैं?

उत्तर- कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही हैं। मानों वे भी अतिथि को बता रही हों कि तुम्हें यहाँ आए। दो-तीन दिन बीत चुके हैं।

प्रश्न 3. पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?

उत्तर- पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत प्रसन्नतापूर्वक किया। पति ने स्नेह से भीगी मुसकान से उसे गले लगाया तथा पत्नी ने सादर नमस्ते की।

प्रश्न 4. दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई?

उत्तर- दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की गई।

प्रश्न 5. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

उत्तर- अतिथि ने तीसरे दिन कहा कि वह अपने कपड़े धोबी को देना चाहता है।

प्रश्न 6. सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ?

उत्तर- सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लेखक उच्च मध्यमवर्गीय डिनर से खिचड़ी पर आ गया। यदि इसके बाद भी अतिथि नहीं गया तो उसे उपवास तक जाना पड़ सकता है।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?

उत्तर- लेखक अपने अतिथि को भाव-भीनी विदाई देना चाहता था। वह चाहता था कि अतिथि को छोड़ने के लिए रेलवे स्टेशन तक जाया जाए। उसे बार-बार रुकने का आग्रह किया जाए, किंतु वह न रुके।

प्रश्न 2. पाठ में आए निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए-

1. अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।
2. अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।
3. लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़े।
4. मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।
5. एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

उत्तर-

1. बिना सूचना दिए अतिथि को आया देख लेखक परेशान हो गया। वह सोचने लगा कि अतिथि की आवभगत में उसे अतिरिक्त खर्च करना पड़ेगा जो उसकी जेब के लिए भारी पड़ने वाला है।
2. अतिथि देवता होता है पर अपना देवत्व बनाए रखे। यदि अतिथि अगले दिन वापस नहीं जाता है और मेजबान के लिए पीड़ा का कारण बनने लगता है तो मनुष्य न रहकर राक्षस नज़र आने लगता है। देवता कभी किसी के दुख का कारण नहीं बनते हैं।
3. जब अतिथि आकर समय से नहीं लौटते हैं तो मेजबान के परिवार में अशांति बढ़ने लगती है। उस परिवार का चैन खो जाता है। पारिवारिक समरसता कम होती जाती है और अतिथि का ठहरना बुरा लगने लगता है।
4. पहले दिन के बाद से ही लेखक को अतिथि का रुकना भारी पड़ रहा था। दूसरा तीसरा दिन तो जैसे तैसे बीता पर अगले दिन वह सोचने लगा कि यदि अतिथि पाँचवें दिन रुका तो उसे गेट-आउट कहना पड़ेगा।
5. देवता कुछ ही समय ठहरते हैं और दर्शन देकर चले जाते हैं। अतिथि कुछ ही समय के लिए देवता होते हैं, ज्यादा दिन ठहरने पर मनुष्य के लिए वह भारी पड़ने लगता है तब किसी भी तरह अतिथि को जाना ही पड़ता है।

egyanarchive

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- तीसरे दिन मेहमान का यह कहना कि वह धोबी से कपड़े धुलवाना चाहता है, एक अप्रत्याशित आघात था। यह फरमाइश एक ऐसी चोट के समान थी जिसकी लेखक ने आशा नहीं की थी। इस चोट का लेखक पर यह प्रभाव पड़ा कि वह अतिथि को राक्षस की तरह मानने लगा। उसके मन में अतिथि के प्रति सम्मान की बजाय बोरियत, बोझिल होने और तिरस्कार की भावना आने लगी। वह चाहने लगा कि यह अतिथि इसी समय उसका घर छोड़कर चला जाए।

प्रश्न 2. 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना'-इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तर- संबंधों का संक्रमण दौर से गुजरने का आशय है-संबंधों में बदलाव आना। इस अवस्था में कोई वस्तु अपना मूल स्वरूप खो बैठती है और कोई दूसरा रूप ही अख्तियार कर लेती है। लेखक के घर आया अतिथि जब तीन दिन से अधिक समय रुक गया तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई। लेखक ने उससे अनेकानेक विषयों पर बातें करके विषय का ही अभाव बना लिया था। इससे चुप्पी की स्थिति बन गई, जो बोरियत लगने लगी। इस प्रकार उत्साहजनक संबंध बदलकर अब बोरियत में बदलने लगे थे।

प्रश्न 3. जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर- जब अतिथि चार दिन के बाद भी घर से नहीं टला तो लेखक के व्यवहार में निम्नलिखित परिवर्तन आए

- उसने अतिथि के साथ मुसकराकर बात करना छोड़ दिया। मुसकान फीकी हो गई। बातचीत भी बंद हो गई।
- शानदार भोजन की बजाय खिचड़ी बनवाना शुरू कर दी।
- वह अतिथि को 'गेट-आउट' तक कहने को तैयार हो गया। उसके मन में प्रेमपूर्ण भावनाओं की जगह गालियाँ आने लगीं।

egyanarchive

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्याय लिखिए-

उत्तर-

1. चाँद – शशि, राकेश
2. जिक्र – वर्णन, कथन
3. आघात – चोट, प्रहार ऊष्मा
4. ऊष्मा – ताप, गरमाहट
5. अंतरंग – घनिष्ठ, नजदीकी

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए-

1. हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे। (नकारात्मक वाक्य)
2. किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे। (**प्रश्न**वाचक वाक्य)
3. सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। (भविष्यत् काल)
4. इनके कपड़े देने हैं। (स्थानसूचक **प्रश्न**वाची)
5. कब तक टिकेंगे ये? (नकारात्मक)

उत्तर-

1. हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने नहीं जाएँगे।
2. किसी लॉण्ड्री पर दे देने पर क्या जल्दी धुल जाएँगे।
3. सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाएगी।
4. इनके कपड़े कहाँ देने हैं?
5. कब तक नहीं टिकेंगे ये?

प्रश्न 3. पाठ में आए इन वाक्यों में 'चुकना' क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए-

1. तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके।
2. तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके।
3. आदर-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे।
4. शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चूक गए।
5. तुम्हारे भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो।

उत्तर- छात्र स्वयं चुकना क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखें और वाक्य से रचना को समझें।

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में 'तुम' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए-

1. लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।
2. तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुसकुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।
3. तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी।
4. कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।
5. भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।

उत्तर- उपर्युक्त वाक्यों में 'तुम' के सभी प्रयोग लेखक के घर आए अतिथि के लिए हुए हैं।

egyanarchive

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1. 'अतिथि देवो भव' उक्ति की व्याख्या करें तथा आधुनिक युग के संदर्भ में इसका आकलन करें।

उत्तर- भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता का दर्जा दिया गया है। उसे देवता के समान मानकर उसका आदर सत्कार किया जाता है। आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य मशीनी जीवन जी रहा है। उसके पास अपने परिवार के लिए समय नहीं रह गया है तो अतिथि के लिए समय कैसे निकाले। इसके अलावा महँगाई के इस युग में जब अपनी जरूरतें पूरी करना कठिन हो रहा तो अतिथि का सत्कार जेब काटने लगता है। ऐसे में मनुष्य को अतिथि से दूर ही रहना चाहिए।

प्रश्न 2. विद्यार्थी अपने घर आए अतिथियों के सत्कार का अनुभव कक्षा में सुनाएँ।

उत्तर-

विद्यार्थी अपने अनुभव स्वयं व्यक्त करें।

प्रश्न 3. अतिथि के अपेक्षा से अधिक रुक जाने पर लेखक की क्या-क्या प्रतिक्रियाएँ हुईं, उन्हें क्रम से छाँटकर लिखिए।

उत्तर- अतिथि के अपेक्षा से अधिक एक जाने पर लेखक परेशान एवं दुखी हो गया। उसने इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप-

- अतिथि को एस्ट्रोनॉट्स के समान बताकर जल्द चले जाने के बारे में सोचा।
- वह आतिथ्य सत्कार में होने वाले खर्च को सोचकर परेशान हो गया।
- उसे अतिथि देवता कम, मानव और कुछ अंशों में दानव नज़र आने लगा।
- पाँचवें दिन रुकने पर उसने अतिथि को गेट-आउट कहने तक का मन बना लिया।

egyanarchive